TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4353**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

तसुमनकुं०

॥ ई० ॥ अर्हं नमः ॥ श्रीदेवगुरवे नमः ॥ सुयकरि सिंतीसर नमुं । सरस्वति समवकरुं निसिदि ...
रं । सिध सकल मन नी सजगीस । १ । तसु सनतकुमार नामि अमरणउ । अतिसमइतरण मन नइ एवाण । नवरवक्षासर
घउ घउसही । वज्जरपणइ सोहइ सुप्रमाण । तो सनतण ॥ आंकणी ॥ जंबूदीव सरय भ्रुवइ कुरुदेस इंद घणापुर
सार । आसासणराज्ञाघार । सहदेवी सुतसनतकुमार । तो सनतकुण । ३ । सकल कला लीधी सलघ । वाधइ जिमइ
तीया नअचंद । तासु सधुरल घुवइ थकी । मित्रसुघ एातसीद्द मिद्देंद । तउ० । ४ । एक दिन रमिवा निगया । मित्रस
हित मेलीस मदाव । अवली परिनइ घोडिलइ । वहीऊ मरवडी अटवी जाइ । ५ तउ० । इमसंस लिकुप दुयधरइ
मित्रगयचलकुले दमीबार । अरबी माहिंन मंतडां । वरसेएक रूवउतिणिवार । तो सनतघ । एकउ साव
ईजोवतो । सारसरं वरप्रमल अरहइंद । आणि सारायरिसा गयउ । दीठउऊ मरकरतआणंद । तो० । ७ । व
ऊमरनारीपरवरिउ । नाटक गीत विनोद इं लीए । मित्रऊमरनइं वलघिउ । अंगाअंगमिलइ सुप्रवीए । ८ । तो० ॥
छरघइ रवइ ऊमरनइं । पसंपदकिमलाधदिव । विपुलमती तनपिएा सएाइ । संसनिवरिखऊमरनउ हेव । तो सन० । ९ ।
जिणि अवसरि उद्धथी टल्या । छघ्यरजायमहावनमाहि । सूपतिरसितेपीडीयउ । मरणलहइ घोडउ तिएावार । भरण
तो सन० । आतपजोगइं ऊमरनइं । पईठि घाने नल इनीर । गयातिअबावांहडी । मूरछागतिडूवा तिणिवार । तो० ।
॥ २२ ॥ सघन वहवासी देवता । आनससरथी आणइ नीर । छांटइ सयरऊमारनउ । सजि मइपीवइ जलधीर । तो०

अमरख तिईं कुमर सुणइ । नृप दाझइ दवनी परि हीर । सुणि नइं । तिण सरव रवरउ जिम सीतल तन मकरंद अपार । नो
म म तण ॥ १३ ॥ तिणि नेप रिकी धीस ही । घिदट ल्प उ कुमर नउ नाम । नउ कोधक लितावताढनउ । जइ अ सिता षपजत
उ ताम ॥ तो सनतण ॥ १४ ॥ दषी आयद माही पउउ वयरसं तार इध्र रब जेह । रूपक री बीहामणउ । नउ पुण कुमर
न बीहइ तह । तो सनतण ॥ १५ ॥ वाय विकुर्वइ अ तिघणी । दण इ कुमर नइं नीगर घाय । वलनउ कुमर इं ताडीयउ
जषजव उघिन षेद अगाह । तो सनतण ॥ १६ ॥ कोपइं सुर तिणउपरइ । आणी नाग इभिर प्रचंड । थयउ सचेत
नाकापसुं । जषकीयउ कुमरइं सत षंड ॥ १७ ॥ तो । सनतण ॥ १८ ॥ गगणगणि जोइवा लगी । आवइ असुर विद्या
धरा काडि । विसट करइ कुमर समा नणी । जयउ । फारकरइ करजो हि । तो सनतण ॥ १९ ॥ इम जस लेई
वाली यउ । दषा तंदनवनइ मफारि । आठ रमणी रंसा समी । तजि जिसी दामिनि झमकार । तो सण ॥ १९ ॥
निरषी द्र रषी कामिनी । विकस र वदन करइ अ । तिफार कुमर कइ इउ मूंक वणवउ । जिणि एवन कीध
उसिणगार । २० तो सनतण । नघो डउ कुमरी लणाइ । पीय संगम पु रिल्पन विश्राम । अत्र इइ दांथी आस
नउ । कं विगपुरु षदेषाड इगाम । तो सनतण ॥ २१ ॥ तनराइ सुवणि लेई गयउ । सचणा वेगत सुदीधउ मा मन । रि
घिनावचन मिल्या सही । जिणि कीया एह वा अदिनाण । तो सनत ॥ २२ ॥ मानस सरजे आवसी । जबतणउ अइ
करिसी जे ह । एकं न्या आवइ तणउ हो सी वर तह जि निसंदेह ॥ २३ ॥ इम क हिनेपारणा वीयउ । वासन

2

नम्र णि सुतस्रु विचार। साउ थकी श्ररणीप डिउ। जग तिहां श्रद्दश्रम्राम। तोसनतण। २४। मन द्दा विमासी।
वालीबउ। पकलमलश्रटवीनइसंमि। गिरि सिघर जिहांघर श्रद्दश। दक्षिण दउ तिहां मन नडइरंग। तोसनण २५।
करणासुर करइ कामिनी। करइ सनउजंपइ सु पिसं नंकुमार। तिणतेह ढीइमकदइ। मननइ सामलितेहउ जसरता
र। २६। तोसनण। संस लिपुरसं नलनउ। सुरसर्वदराजा घरनारि। ये दजसासुकमाउली। हू तपकश्रा विवसु विव
तोसनतण। २७। रूपदिसा डिउकुमरनवा। तिणि   कमरि सुकनइमनेह। बाली वाणिइ मांगणउ। तातकीय
इं माहकसु णिदेव। तोसनतकुमाण। २८। गउ वि   इंबइवउ जिणिसमइ। विद्याधर श्रपहरतीवार। इणि
मानकिंमूकागयउ। इमकरतावलिकइति   वार। तोण। २९। श्रसनावगमइरोदनउ। सुतवर
जावगकपाडीनारि। ततखिणिकुमरइं तसगण   उधरणिपडाग विसुषिइदारी। तोसनतण। ३०। सनतकु
मारइं तेवरी। श्रधीरतनसुनंदानाम। रूपिकलाश्र   तिश्रागली। चक्केसुर नवसुमनइगाम। तोण। ३१। तसनम
संध्यावली। श्रावीबंधवप्रवदेशि। कापिवडीवलिउपसमइ। निमतिवनसमारिसेघ। ३२। तोसनण। जे
तुक बंधवन इंदणइ। तेताहखहीसमिरतार। इस्यउंकहीन इकुमरस्यउ। पाणिग्रहणकरीतिणिवार।
३३। तोसनण। तिणि श्रवसरि डइश्रावीया। विद्याधरबोलइ विष्यात। तुम्हऊपरि श्रावइचडी। जेउस्व
रिषदहणि उतसुनात। तोसनतण। ३४। सवनावगनरपति वली। वडावगवलिमेलीसाथ। श्रावइ उद्धसेवा। २

सणी। करिहुपाश्रहूकपरिनाथ। तोसनतण। ३५। तिणि श्रवसरि संध्यावली। विद्या पिचिंतसंबंधि जेह
कुमरनइं श्रापइसदी। श्रसनविगसुंकूकइतेह। तोसनण। ३६। विहतो वारघणी थई। श्रसनवेगनउ
कीधउघात। राजलीयउस वितेह नवपालइसनतकुमार विष्यात। तोसनतण। ३७। विद्याधरसबितलग
इ। सुष विलसइसुरजेमउदार। चंडावगइमवीनवइ। सउकन्यापरणउसुकसार। तोसनण। ३८। इकदिनि
मुकनइं दाषवइ। पाणिग्रहणनणउ श्रहिनाण॥   श्रावरमणिजेपरणसी। सुवनावगराजानीजाण। ३९।
तोण। पूरबसवनावयरथी। जीषश्रुसना घमना वि   स्सर। तकारण वलिहूबियउ। घइरकिसीपरिहुव
उतीवार। तोसननय। ४०। रिषिबोलइ तिहुं   स्यानसु। संसलिपद्दनाइरवदान। कंचणउरना
उसलव। विकमजसनव नइं विष्यात तोसनत   कुमाण। ४१। सा रथवा हिनिहांवसइ। नागदत्तघरि
श्रपछरनारि। विस्नश्रीनामइंसदा। रुपनीहषि   पडइइकवार। तोसनण। ४२। श्रंतेउरमाहवी रमान
हूवउराजातिणिसाथि। वीजीनारिनसंतरइ। पायतणउ तेनेन गिणइकाथ। तोसनण। ४३। तिणि दुषितेण
हिलउथयो। नागदत्ततेहनवपरिवार। नेहवनसु पिकचरइ। समइनगरितेहउ सरतार। तोसण। ४४।
सूपति लज्जा श्रवगणी। श्रकाणी उश्रातउरसार। विस्नश्रीएकमनिवसी। राजतणी छंडीकणवार। तोण
४५। राणी सवियकवमिली। पंचसयातेकि इउमित्र। कामिणिजोगइं तसहणी। विस्नश्रीनवकीयउ श्रंन ३

सं.स्तु
२

तोसनतण ॥४६॥ सागकलितराजाऊवउ विकलयणइएवोलइबोल एहनउसाथनमेलू मिउं ॥ गोदनवंउइ
तहनिटोलवसनतण ॥ ३७ ॥ पासइनिवबइठउरहइ मंत्रीसरिकीधउपरपंच ॥ परहुनपणइछोटवोधरइ मृतगान
णउपजाणिउसंच ॥ तोसनतण ॥ ४८ ॥ तससबणादीवीपरिहरइ रूपनिरुपमनादिकसविलाग जाईनहदे
घाउइजेतलइ मतगलणउघयत्र नृदवजीय तोसनतण ॥ ४९ ॥ तउरूपसंदगइंचडिउ दीप्पालीयइमोटइमं
डाणि वरणकरणपालीकरी नीजइकलपिहूउमुस ध्यान ॥ तोसनतण ॥ ५० ॥ ववायरतनपुरिकपनउ से
ठिकुलइंजिणधम्मनाम मणोवासिकजाणाय ॥ जेहवउनामतेहवउपणाम ॥ तोमनतण ॥ ५१ ॥ घारथ
वाहमरणलहइ विपुलमणइरमणीनइरंगि ॥ बेसणाकुलतेकपनउ प्रमुककमिहुउतिङउजोग
तोसण ॥ ५२ ॥ नपदोइमासीश्रावरश रतनपुराश्री वइएकवार रायघरणपारणसणी तेडिउतेतापस
अविचार ॥ ५३ ॥ तोसनतण ॥ जिणधम्मीनइंतिणिसमइ पिघातिमवलसराणउरोम परवतथरतणइउद
य रायप्रतिइबोलइसंजोग ॥ ५४ ॥ तोसनतण पहनीरु रिंडपारणउमुझनइंएइकरिवानउलाउ रायवचनश्रेणीक
रइ तिणितेरवउमंडिउसप्रसाउ तोसनतण ॥ ५५ ॥ श्रावक नोप्रवीथरइ नाबानउसाजनसरिसार दुधरपयजीम
इतिहां प्रगटिउपलनइकधिरसरीर ॥ ५६ ॥ तोसनतण ॥ वदनसुनिजघरिगयउ श्रावकमनिआणीवइरा
ग ॥ दीक्षायहिकाउसग्गरहइ पंनरपनरदिवसनइलाग ॥ तोसनतण ॥ ५७ ॥ मांसनवइनिहांपंपथ्या इमउ ३

४.

इमासनतणउ अवसाण ॥ आराधीसुरपतिहुआ पदिसइकल्पिऊइंतमजाल ॥ तोसनतण ॥ ५८ ॥ नापसने
वाहणथयउ इंद्रतणइंअइरू ॥ इंद्रअवीनइअनुधया महदेवीउरिरयणनिधान ॥ तोसनत ॥ ५९ ॥ तिहथीतिरि
नरनइभवि ॥ नवनथायासिघसध्यान ॥ इंदवबीनइउमूधया मालिदेवीउरिरयणनिधान ॥ ६० ॥ तोसन
त ॥ ६१ ॥ विधनउकदणनिवदीमउ चंडावगनरपतिनिणवामि ॥ सनतकमारइंतेसुणी ॥ सिवकन्यापरणी
नसुनाणि ॥ तोसनतण ॥ ६२ ॥ एकवारउपकसवदससधि ॥ कामिणनिउजोग समरसमइजिमभालवी विद्धिधयारइ
तिविलसइतीण तसनतण ॥ ६३ ॥ सनुदिनइसाकय नी मामसरआवीनइकाज ॥ इलिघानफासावासत्वा
मिनणरूत्रपउसुसंआज ॥ तोसनतण ॥ ६४ ॥ अव सरजाईवीनवइ मित्रकमरनइंसकरजोडि वालि
उदधिणाउरलणी अणाणिपिनानउपुहवइ कोउ ॥ तोसण ॥ ६५ ॥ इमनिसुणीनइवालीउ तकुर
मदेखमेलीसमदाय विहल्लउहथिणाउरिगयउ जणणिपितानइलागइपाय ॥ तोसण ॥ ६६ ॥ नृपनिसु
मनउसुपिवउ राजसयलकीधउअनिसेक आप णपइसुतमेलीयउ करसवधपीसिवपकुताछेक ॥ ६७ ॥
तोसनतण ॥ ६८ ॥ पालेइराजनलीपरिइं अनुकमिनेमाथइसनसर वउदरयणनवनिहिसही पामइंअगज
समाहिंअसघंउ ॥ तोण ॥ ६९ ॥ इरवसवसुकसारिसउ इसिउंजाणीसकेतिणिकालि ॥ तेविविहपरिमोक
ली वक्केस्वरिनउअतिहरमाल ॥ तोसण ॥ ७० ॥ एकअवसरइमाणनउ आविउसंगमदेवसुजाण सक्र
मनाइमावनी तेजनपइजिमिउवारहसाण ॥ तोण ॥ ७१ ॥ बजसुरपूवइइइनइं पसारिउतवलिनि

४

स.त.कु.म रूपईकोश। इंद्रक इम टुचिणाउरिइं। सनतकुमार अधिक परजो ३। तोसनं०। ७०। वंसण थई कुण्याबाया
पे घङ्‌वक्रीश्वरनअरूप। तिणि अनसरिमदाणकरइ। इंद्रक ह्याप्तिस उसरूप। तो०। ७१। रूपसणइकिम आ
वीया। मननीबातकदी। तिणिसार। रायकदइअनिमानमिउं। जोवउअनकरिआवउसिणगार। तोसनत०। ७२
नरपतितेहउयरिकरी। सुराभादिं बोलाव्यातेहा। देषीमनकक्षणीयउ। रायकद इसाजउसंदेह। तो सन०। ७३। प्रथ
मथकीदोणउपडिउ। तुम्हचरूपनिहालीजो ३। ति परिथीएकपनन। धरवयराणधरइमनिसोइ। तो०। ७४
चारित्रलीध उनावसिउं। पुतनइंसंपीसघलउरा जो। घमदमसंजम आवरइ। निममयणइकरइनिउ
काउउ। सनत०। ७५। रिद्धिसघलीकेडइंफि रइ। इमकरतांवउल्पा घटमास। मुनिवरवकलउ
तपकरइ। सातइलब्धिऊपनीतास। तोसनत०। अतिह। अरसविरसआहारथी। सयरथयातसुसोल
हरोग। इंहघसंसाससली। आव्यादेवपरावणजो ग तोस०। ७७। वइदपणइथईवीलीया। तपधकरी।
टालुंतुम्हव्याधि साघुकहइ। टालवकिसा। दरविनकिमानाविन एव्याधि। तोस०। ७८। दरविनटालउतेसण
इ। नावितुनीनविजाणउंसार। रिषिनिजघुंकीआंगुली। करिसलीजिमसावनसार। ७९। तोसनत०। एआ
वाधदालिवा। पुरुनइंपणिध इहाकतिविसेष। कर्मतणा स्यूटालिजिइ। तउजुइसफलउजनम [redacted] तोसनत०। ८०। इहनाठीवीलेहनी। दरपीदेवगया निजगामि। वाणिपालइआकरउ। सनतक
मारसलइपरिणाम। तो०। ८१। कुमरतणइमंडलपणइ। महसपंचासपंचासवरीस। लाषवरिसचक्रीपण ४
इ। तिमदाखिजाणउथसजगीस। तोस०। ८२। अणसणसंमेतइंकरी। मासदिवसयामी निरवाणि। कर्मष
पीसिधिइगया। नामिइंइस्मतिहूइपुलाइ। ८३। तोस०। सोलहसइसतरीतरइ। सावणसुदितेरसिअवधार
रिउत्तराध्ययनसंपेपथी। विरतिषिकीकीधबहार। तोस०। ८४। करजोडीसेवकलणइ। इदय धरीतुइ
रचीयउरास। सेवककइहजिकेसुणइ। तिहघरिमंगललबिनिवास। तोसनत०। ८५। इतिसनतकुमाररास
समाप्तः॥ ॥संवत१८४४वर्षेपोससुदिबाजादनेलिषितं॥ लेषकपाठकयोःशुभंभवतु॥॥ ॥श्री॥
कनलाँ मालकी अतरीपाठअरर्थं
लै

५|